साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

आप सभी को अंग्रेजी नववर्ष 2024 एवं गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं। साहित्य, सिनेमा, धर्म और राजनीति का संतुलन समाज को प्रगति की ओर ले जाता है। नूतन वर्ष में नई उम्मीद नया तराना और नए-नए विकल्प से समाज की स्थिति बेहतर होगी। समाज में समन्वय की भावना को उच्च रखकर तुलसी के राम की प्राण प्रतिष्ठा से समाज में परिवर्तन अपेक्षित है, जोकि सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगा। धर्म कोई व्यवसाय, कट्टरता, आडंबर, हत्या, जातिवाद, छुआछूत और गाली गलौज नहीं है, बल्कि जीवन को साधने का एक ऐसा माध्यम है जो कि हर एक मनुष्य को आदर सम्मान, क्षमा, दया, प्रेम, सत्य और ईमानदारी जैसे आदर्श की ओर ले जाता है। हमारे संविधान की रचना भी मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखकर की गई है। जिसमें समानता, स्वतंत्रता, शिक्षा संस्कृति धर्म तथा संवैधानिक उपचारों का अधिकार दिए गए हैं। संविधान की उद्देशिका में सब निहित है।

इस अंक में अब्दुल रहमान का गीत 'हिंदोस्तान है सबसे अच्छा' में भारत की गौरव गाथा, तिरंगा, गंगा जमुनी तहजीब और जाबांज संतरी का जिक्र मिलता है, वहीं पर श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा में डॉ. दीपक शर्मा की कविता 'रामलाल घर आएंगे' में राम जन्म की प्रतिष्ठा को सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है। डॉ. राम यश पाल की कविता 'रोटी की परिधि' में तवे की रोटी और जलने वाली गदोरी का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है। भूख की परिधि में हर रोज ही रोटी घूमती है, समाज के वंचित वर्ग की आशा-निराशा की अभिव्यक्ति कविता में देखने को मिलती है। संतोष कुमार प्रजापति 'माधव' की कविता 'पुराने खत' में पत्रों का प्रेम और स्मृति आलिंगन को व्यक्त किया गया है। डॉ. नयना डेलीवाला का आलेख ' लोकगीतों में नारी विमर्श' में लोकगीतों की परंपरा को सटीकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। वहीं पर कुशराज बदला ओकरी की कहानी 'अंतिम संस्कार' में समाज की विडंबना, लोग संस्कृति, समाज की एकता, समानता पर जोर देती है। स्त्री शिक्षा में सुधार, कानून व्यवस्था, चुनावी माहौल और संविधान के अनुसार शासन व्यवस्था पर जोर दिया गया है।

डॉ मृत्युंजय कोइरी की कहानी 'चित्रगुप्त की चिंता' में किसान आत्महत्या, निर्धनता, बेईमानी और दलाली इत्यादि पर व्यंग्य किया गया है। डॉ.वर्षा सिंह की कविता 'मातृभूमि से प्यार' में देश प्रेम की भावना, स्वतंत्रता सेनानियों से प्रेरणा और राष्ट्र धर्म के कार्य इत्यादि व्यक्त किया गया है। उमेश चंद्र राय के '108 दोहों में श्री राम' बेहद रोचक ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं, जिनमें राम की व्याख्या अलग-अलग ढंग से की गई है। दिलीप कुमार की लघु कथा 'राइज आफ पिंक' में स्त्री के कपड़े, मेकअप, फीचर्स, चमक-दमक, गोरी- काली, पतली और लंबी औरत पर मर्द की नजर होना, रूढ़िवादी परंपराओं का विरोध, स्त्री शक्ति इत्यादि दिया गया है। प्रो. पुनीत बिसारिया के आलेख 'हिंदी सिनेमा टीवी और ओटीटी में श्री राम' में भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों में श्री राम की भूमिका प्रासंगिक बताया गया है। सिनेमा में भी राम के किरदार को किस तरह देखा गया। इस बारे में एक शानदार आलेख देखने को मिलता है। गोवर्धन यादव का आलेख 'फिल्मी गीतों में बरसता सावन' में हिंदी फिल्मी गीतों में हुई बरसात का बेहतरीन चित्रण और अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। बारिश में फिल्माए फिल्म गीतों से पाठक श्रोता के मन में उल्लास प्रसन्नता भर जाती है। साहिबा खातून का शोध आलेख 'लोक संस्कृति के परिपेक्ष में बुंदेलखंड' में बुंदेलखंड

ISSN: 2584-0819

की लोक संस्कृति को शोध परक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें महत्वपूर्ण तथ्यों को लोकगीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। दयानंद पांडे का आलेख - 'चिरयौवना अयोध्या की अधिष्ठात्री देवी अयोध्या को प्रणाम कीजिए' में अयोध्या नगर के इतिहास और भूगोल को बताने की कोशिश की है। अयोध्या की उथल-पुथल को बताया गया है। अंत में, शांति स्वरूप मित्तल की ग़ज़ल - 'तो अच्छा है' में प्रेम, खुशी, मुकद्दर, मित्रता, रिश्ते-नाते और जीवन की इच्छाओं को व्यक्त किया गया।

एक बार पुनः सभी पाठकों को अंग्रेजी नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं...

-आशुतोष श्रीवास्तव